कुछ अप्रचलित तालों का परिचय

शुभम वर्मा
अतिथि प्रवक्ता–संगीत विभाग
छत्रपति शाहूजी महाराज वि0वि0
कानपुर।

सारांश (ABSTRACT)

कुछ अप्रचलित तालों का संक्षिप्त परिचय उदाहरण के साथ जैसे–अष्टमंगल ताल 11 मात्रा, इकवाई ताल 16 मात्रा, कुम्भ ताल 11 मात्रा, कैदफरोदस्त ताल 19 मात्रा, गजझम्पा ताल 15 मात्रा, गणेश ताल 20 मात्रा, श्री ताल 9 मात्रा, गरुण ताल 13 मात्रा, शुभ ताल 17 मात्रा और तिलवाड़ा ताल में 16 मात्रा है।

1. **अष्टमंगल ताल**– इस ताल की मात्रा, संख्या, विभाग एवं ठेका के बोलों के विषय में मतभेद हैं। कोई इसे 11 मात्रा का तो कोई 22 मात्रा का मानता है। यह एक अप्रचलित और प्राचीन ताल है। अष्टमंगल के 11 मात्रा का ठेका बन्द बोलों का है और 22 मात्रा का ठेका खुले बोलों का है। 11 मात्रा के ठेका इस प्रकार हैं–

मात्रा–11 विभाग–11 ताली–1,3,4,6,7,9,10,11 खाली–2, 5, 8 पर

धी	ना	धी	ना	धी	धी	ना	धागे	नधा	त्रक
x	0	2	3	0	5	6	0	7	8

22 मात्रा का ठेका इस प्रकार है–

मात्रा–22 विभाग–11 ताली–1, 5, 7, 11, 13,? 17, 19 और 21 पर

खाली– 3, 9 और 15 पर

धा	ऽ	।	कि	ट	।	त	क	।	धु	म	।	कि	ट	।
x			0			2			3			0		
त	क	।	धे	ऽ	।	ता	ऽ	।	त	क	।	धा	दि	।
4			5			0			6			7		
ग	न	।[1]												
8														

2. **इकवाई ताल–** तीन ताल के स्वरूप पर आधारित यह एक कम प्रचलित ताल है। बंगाल में इसे आड़ा–ठेका के नाम से भी जाना जाता है और इसका प्रयोग मध्य लय में छोटा ख्याल एवं सुगम संगीत के साथ संगति में किया जाता है। इकवाई ताल का ठेका इस प्रकार है–

मात्रा–16 विभाग–4 ताली–1, 5, 13 पर और खाली 9 पर

धा	ऽ	घे	घे	।	धा	घे	ऽ	घे	।	ता	ऽ	के	के	।
x					2					0				
धा	घे	ऽ	घे	।[2]										
3														

3. **कुम्भ ताल–** यह एक प्राचीन, अप्रचलित और क्लिष्ट ताल है। इसके ठेके के बोल से इसे पखावज की ताल होने का संकेत मिलता है। इसका प्रयोग प्राचीन ध्रुव पद अंग की गायकी के साथ किया जा सकता है। कुम्भ ताल का ठेका इस प्रकार है–

मात्रा–11 विभाग–11 ताली–1, 3, 4, 5, 7, 8, 9 और 10 पर

खाली–2, 6 और 11 पर

धा	।	धिं	।	तेटे	।	कता	।	धा	।	धिं	।	नक	।
x		0		2		3		4		0		5	
तेटे	।	कता	।	गदि	।	गन	।[3]						
6		7		8		0							

4. **कैदफरोदस्त ताल–** यह एक अप्रचलित ताल है। कैदफरोदस्त का ठेका इस प्रकार है–

मात्रा–19 विभाग–7 ताली–1, 7, 9, 11, 13 और 16 पर

खाली–4 पर

धिं	ता	कत	।	तिं	ता	तिरकिट	।	धिं	ता	।

x				0				2	
कत	ता	।	तिरकिट	तूना	।	धीधी	नग	धीधी	।
3			4			5			
नग	धिना	धिंता	कत्ता	।[4]					
6									

5. गजझम्पा ताल– यह मृदंग की एक प्रचलित ताल है। असम मात्रा की ताल होने के कारण गजझम्पा ताल की गणना क्लिष्ट तालों में की जाती है। इसके बोल खुले हैं। यह ध्रुवपद अंग की गायन शैली के साथ संगत करने की एक उपयुक्त ताल है। विद्वान कलाकार इसमें स्वतंत्र वादन भी कर सकते हैं। अतः इसमें परन और रेला आदि बजाया जा सकता है। इस ताल का ठेका मध्य लय में बजाने योग्य है। यह एक असम पद ताल है। इसका छन्द 4/4/3/4 है। गजझम्पा का ठेका इस प्रकार है–

मात्रा–15, विभाग–4, ताली–1, 5, 12 और खाली 9 पर

धा	धिन	नक	तक	।	धा	धिन	नक	तक	।
x					2				
तिं	नक	तक	।	तेटे	कता	गदि	गन	।	
0				3					
नग	धिना	धिंता	कत्ता	।[5]					

6. गणेश ताल– एक अप्रचलित ताल है–

मात्रा–20 विभाग–10 ताली–1, 5, 7, 9, 13, 17 और 19 पर तथा

खाली–3, 11 और 15 पर

धा	दिं	।	ता	ता	।	धेत	धित्	।	घेघे	नग	।
x			0			2			3		
घेना	धा	।	किट	तक	।	किड़	धा	।			
4			0			5					
किट	तक	।	किट	तक	।	गदि	गन	।			
0			6			7					

7. श्री ताल– श्री ताल के बोल तबले के हैं और यह विलम्बित और मध्य लय में ख्याल अंग की गायकी तथा तबला पर स्वतंत्र–वादन के लिए उपयुक्त है। श्री ताल का ठेका इस प्रकार है–

मात्रा–9 विभाग–4 ताली–1, 3, 7 पर और खाली–5 पर

धिं	तिरकिट	।	धी	ना	।	कत	ता	।
x			2			0		
धिन	कधा	तिरकिट	।					
3								

8. गरुड़ ताल– इस ताल पर आड़ा चौताल की छाया है। ख्याल अंग की गायकी और तबले पर स्वतंत्र वादन के लिए उपयुक्त यह ताल विलम्बित और मध्य लय में वादन के योग्य है।

धिं	तिरकिट	।	धी	ना	।	तू	ना	।	कत	ता	।
x			2			0			3		
तिरकिट	धीना	।	धीना	कधा	तिरकिट	।					
0			4		0						

9. शुभ ताल– मात्रा–17, विभाग–7, ताली– 1, 3, 5, 7, 13 और 14 पर
खाली–9 पर

ठेका–

धिं	ना	।	धिं	ना	।	धिंधिं	धिना	।	धिंधिं	धिना	।
x			2			3			4		
ताऽत्रक	तीना	ताऽत्रक	तीना	।	कतता	।					
0					5						
त्रकधिं	ताऽत्रक	ता	ऽत्रक	धिंना	।						
6											

10. तिलवाड़ा ताल– मात्रा–16, विभाग–4, ताली–1, 5, 13 पर तथा खाली 9 पर

ठेका–

धा	तिरकिट	धिं	धिं	।	धा	धा	तिं	तिं	।
x					2				

ता	तिरकिट	तिं	तिं	।	धा	धा	धिं	धिं	।[6]
0					3				

मात्रा संख्या, विभाग, ताली, खाली में तीनताल और तिलवाड़ा ताल में में कोई अन्तर नहीं है। इसे विलम्बित लय का तीन ताल कहें तो अनुचित न होगा। इसका छन्द रूप 4/4/4/4 है। अतः यह एक समपद ताल है। निश्चित ही इसका जन्म तीन ताल के बाद हुआ होगा। अनुमान है कि जब विलम्बित लय में ख्याल गाने का प्रचलन बढ़ा तो इस ताल की रचना हुई होगी। अतः इसका प्रयोग सदा विलम्बित या अति–विलम्बित लय में ही ख्याल अंग की गायकी के साथ संगत करने में किया जाता है। सामान्यतः इस ताल में स्वतंत्र वादन नहीं होता। इसमें बजाने की अधिक गुंजाइश नहीं है। इसमें ठेके के भराव के अलावा सम से मिलने के लिए दो चार मात्रा में तिराई या मोहरा बजाया जा सकता है।

संदर्भ सूची–

1. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव–ताल कोश, पृ0 23
2. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव–ताल कोश, पृ0 35
3. हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव–वाद्यशास्त्र, पृ0 52
4. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव–ताल कोश, पृ0 63
5. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव–ताल परिचय भाग–2, पृ0 144
6. हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव–वाद्यशास्त्र, पृ0 50